eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 12, December 2025

शिक्षक और छात्रः पारस्परिक सहभागिता, संवाद और शिक्षण–प्रक्रिया में उनकी भूमिका का अध्ययन

गायत्री देवी[1], प्रो. स्वाति सक्सेना[2]
[1]शोधार्थी, डी.जी.पी.जी.कॉलेज कानपुर, उ0प्र0
[2]प्रभारी शिक्षाशास्त्र, डी.जी.पी.जी.कॉलेज कानपुर उ0प्र0

Received: 26 Dec 2025 Accepted & Reviewed: 28 Dec 2025, Published: 31 December 2025

Abstract

प्रस्तुत शोध पत्र में शिक्षक और छात्र के पारस्परिक योगदान एवं शिक्षण प्रक्रिया में उनकी भूमिका का अध्ययन किया गया है। इसमें शिक्षक को ज्ञान, मार्गदर्शन, अनुशासन का प्रेरणा स्रोत बताया गया है। छात्र को सक्रिय सीखने वाला शिक्षार्थी, जिज्ञासु और सहयोगी के रूप में देखा गया है। शिक्षण प्रक्रिया में दोनों की सहभागिता अनिवार्य होती है, तभी शिक्षण प्रक्रिया प्रभावी और उपयोगी बनती है। कोई भी शिक्षक केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं होते अपितु उन्हें स्पष्ट और स्वतंत्र वक्ताहोने के साथ ही छात्रों के व्यक्तित्व और सामाजिक मूल्यों के निर्माण में भी योगदान देते हैं। दूसरी ओर छात्रों के भूमिका केवल सुनने तक सीमित नहीं है, अपितु उन्हें स्व अध्ययन और अनुसंधान के द्वारा ज्ञान को आत्मसात करना आवश्यक है। छात्रों को निष्क्रिय होकर नहीं बल्कि सक्रियता के साथ शिक्षकों के शिक्षण कार्य में योगदान देना होता है। शिक्षक छात्र का आदर्श होने के साथ–साथ उनके मित्र व पथ प्रदर्शक होते हैं, जिनका छात्रों द्वारा अनुसरण किया जाता है। अतः शिक्षकों को समय के साथ–साथ स्वयं का परिमार्जन व अद्यतन करते रहना चाहिए। शिक्षक और छात्र जब सक्रिय होकर अपनी भूमिका का वहन करते हैं तभी शिक्षण प्रक्रिया सुचारू रूप से चलती है, क्योंकि यह दोनों ही शिक्षण प्रक्रिया के महत्वपूर्ण स्तंभ है। इस शोध पत्र में शिक्षण प्रक्रिया को सफल बनाने में शिक्षक और छात्र दोनों के सफल भागीदारी को स्पष्ट किया गया है।

मुख्य शब्द– शिक्षक, छात्र, शिक्षण प्रक्रिया, सहभागिता, संवाद।

Introduction

शिक्षा केवल एक सामाजिक संस्था नहीं बल्कि एक जीवंत प्रक्रिया है, जो मनुष्य के बौद्धिक, मानसिक, चारित्रिक, नैतिक और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस प्रक्रिया के दो प्रमुख आधार हैं– शिक्षक और छात्र। इन दोनों की पारस्परिक सहभागिता से ही शिक्षण का वास्तविक उद्देश्य प्राप्त होता है। शिक्षक ज्ञान का स्रोत है और छात्र उस ज्ञान के सह–निर्माता होते हैं। जब दोनों के बीच संवाद और सहभागिता होती हैं, तो शिक्षा केवल विषयवस्तु तक सीमित नहीं रहती, अपितु यह जीवन आदर्शो को स्थापित करने का माध्यम बन जाती है। शिक्षक एक दीपक की भांति है जो अपने ज्ञान रूपी प्रकाश से छात्र के अज्ञान रुपी अंधकार को दूर करता है और छात्र उस दीपक की लौ की तरह है जो ज्ञान को आत्मसात कर स्व विकास की ओर अग्रसर होता है और स्वयं के साथ वह समाज को भी दैदीप्यमान करता है। शिक्षक और छात्र के बिना शिक्षा की प्रक्रिया अधूरी रहती है। शिक्षक वह स्रोत है जिसके द्वारा ज्ञान, मूल्य और अनुभवों का सुव्यवस्थित एवं परिमार्जित हस्तांतरण छात्र के माध्यम से भावी पीढ़ी तक पहुंचते हैं, जिसके द्वारा छात्र अपना व्यक्तित्व निर्माण तथा समाज और राष्ट्र को नई दिशा प्रदान करने की क्षमता विकसित करते हैं। शिक्षक अपने छात्र की अच्छाई और कमियों का आकलन कर उन्हें सही और सर्वश्रेष्ठ

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 12, December 2025

अभ्यास की ओर ले जाते हैं। शिक्षा केइतिहास परदृष्टि डालें तो वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली में अनेक रूपों में परिवर्तन हुए हैं– पारंपरिक गुरुकुल प्रणाली से लेकर आधुनिक डिजिटल प्रणाली तक। परंतु सभी रूपों में शिक्षक और छात्र का संबंध अपरिवर्तनीय बना हुआ है। यह संबंध केवल विद्यालय की चारदीवारी तक सीमित नहीं है बल्कि यह एक मित्रवत, सहयोगात्मक, संवेदनशील और नैतिक संयोजन का प्रतिनिधित्व करता है। आधुनिक शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक और छात्र के बीच संबंध केवल गुरु और शिष्य तक सीमित नहीं हैं। अपितु सहभागी और परस्पर संवादात्मक बन चुका है आज के समय में शिक्षक एक–मार्गीय व्याख्यान प्रक्रिया से आगे बढ़कर सहभागिता, सक्रियता और नवाचार आधारित प्रक्रिया बन गई है, जिससे शिक्षक और छात्र दोनों की भूमिका अधिक व्यापक और जिम्मेदार बन गई है। जहां शिक्षक को सजग और जागरूक होना आवश्यक है, वहीं छात्र भी अब केवल निष्क्रिय श्रोता नहीं है अपितु उनके लिए भी सक्रिय शिक्षार्थी का व्यवहार करना आवश्यक है। शिक्षक का कार्य केवल विषय वस्तु को समझाना और विद्यालयी कार्यक्रम तकसीमित नहीं है, बल्कि छात्रों में चिंतन कौशल, कल्पना ने नैतिकता और आत्मनिर्भरता जैसे गुणों को विकसित करना भी है। जब शिक्षकछात्रों के प्रति निष्पक्षता, स्नेह, करुणा, धैर्य, समझ, प्रतिबद्धता और आशा ऐसे गुणों का प्रदर्शन करते हैं, तो एक प्रभावशाली शिक्षक – छात्र संबंध सीमित होता है, दूसरी और छात्रों को भी यह समझना आवश्यक है कि वह केवल सूचना प्राप्त करने के लिए नहीं बल्कि वह एक सक्रिय जिज्ञासु और दायित्वपूर्ण नागरिक के रूप में शिक्षण प्रक्रिया के केंद्र में है।

प्रस्तुत शोध पत्र इन्हीं आयामों को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षक और छात्र के पारस्परिक योगदान को चिन्हित करता है। यह स्पष्ट करता है कि जब तक शिक्षक के अध्यापन शैली और छात्र का सीखने का दृष्टिकोण एक दूसरे के अनुरूप नहीं होंगे तब तक शिक्षा अपने वास्तविक लक्ष्य को नहीं प्राप्त कर सकती। शिक्षण प्रक्रिया को सफल बनाने के लिए शिक्षक और छात्र को सक्रिय होकर एक दूसरे के पूरक के रूप में कार्य करना होगा।

ऐतिहासिक संदर्भ में शिक्षक–छात्र संबंध– प्राचीन भारत की गुरुकुल प्रणाली के अध्ययन से ज्ञात होता है कि शिक्षक छात्र संबंध बहुत ही घनिष्ठ, आत्मीय और परस्पर स्नेह पूर्ण होते थे। शिक्षक केवल छात्रों को विषय का ज्ञान ही नहीं अपितु अनुशासन, धर्म, मूल्य, संस्कृति और नैतिकता भी सिखाते थे। शिक्षक अथवा गुरु अपने छात्र को पुत्रवत स्नेह करते थे और छात्र भी शिक्षक को पिता के समान मानते थे, उनकी प्रत्येक आज्ञा का पालन करते थे। छात्र विद्या प्राप्त करने केलिए गुरु गृह में ही निवास करते थे। प्राचीन काल में शिक्षक व छात्र के मध्य केवल शाब्दिक ज्ञान का ही आदान–प्रदान नहीं होता था अपितु शिक्षक छात्र के संरक्षक के रूप में कार्य करता था और छात्रभी शिक्षक के प्रति अगाध श्रद्धा रखते थे। रामायण में वशिष्ठ – श्री राम, महाभारत में द्रोणाचार्य, अर्जुन, कृष्ण जैसे उदाहरण से शिक्षक और छात्र के संबंध को और अधिक गहराई से समझा जा सकता हैं। प्राचीन काल में शिक्षा का उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति था, इस प्रकार शिक्षक और छात्र एक ही पथ का अनुसरण करते थे और संयुक्त प्रयत्न तथा सहयोग से जीवन के चरम लक्ष्य को प्राप्त करने की चेष्टा रखते थे। समय के साथ शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन आया परंतु शिक्षक और छात्र के मध्य संबंध आज भी जीवित है।

मनोवैज्ञानिक संदर्भ में शिक्षक– छात्र संबंध–मनोवैज्ञानिकों के अनुसार शिक्षण और अधिगम की प्रक्रिया केवल बौद्धिक नहीं होती अपितु यह एक भावनात्मक, संवेगात्मक और सामाजिक प्रक्रिया होती है। शिक्षण ही वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से शिक्षक और छात्र और विषय के मध्य संबंध स्थापित होता है। दोनों

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 12, December 2025

के परस्पर सहयोग एवं प्रयास से शिक्षण प्रक्रिया अधिक प्रभावोत्पादक, वास्तविक, उपयोगी और सफल बन सकती है। मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के प्रयोग द्वारा शिक्षण को और अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है। शिक्षण प्रक्रिया को सुचारू रूप से चलाने के लिए एक शिक्षक को छात्र के मनोविज्ञान का ज्ञान होना चाहिए। प्रत्येक छात्र एक समान नहीं होते। वह किसी न किसी प्रकार से एक दूसरे से भिन्न होते हैं। छात्र के आयु के प्रत्येक स्तर पर उसके सीखने की क्षमता भिन्न–भिन्न होती है। ऐसी स्थिति में एक शिक्षक को कक्षा में शिक्षण व्यवस्था मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाकर लागू करनी चाहिए। जिससे प्रत्येक छात्र का भावनात्मक व संवेगात्मक पक्ष विकसित हो सके। केवल बौद्धिक विकास से ही छात्रों का संपूर्ण विकास नहीं होता है, विकास के अन्य पक्षों को भी ध्यान में रखकर शिक्षण प्रक्रिया को सफल बनाया जा सकता है।

वर्तमान संदर्भ में शिक्षक–छात्र संबंध– आज के तकनीकी युग में जहां शिक्षा का डिजिटलकरण हो रहा है। वहीं शिक्षक और छात्र के संबंध की प्रकृति भी बदल रही है। पहले शिक्षक को ईश्वर से बढ़कर और पिता तुल्य संरक्षक माना जाता था, वहीं आज शिक्षक संरक्षक होने के साथ–साथ मित्र, पथ–प्रदर्शक की भूमिका भी निभा रहे हैं। आज शिक्षा केवल व्याख्यान प्रणाली तक सीमित नहीं अपितु शिक्षा के नए रूपों ने विद्यालय परिसर से बाहर पहुंच स्थापित की है। ऑनलाइन शिक्षा, वर्चुअल क्लास, स्मार्ट क्लास जैसे माध्यमों ने शिक्षा को भौगोलिक सीमा से मुक्त किया है। लेकिन इसके साथ ही नई चुनौतियां भी आई हैं। परंपरागत शिक्षा प्रणाली में शिक्षक–छात्र में आमने–सामने रहकर अधिक सक्रियता से शिक्षण कार्य संपन्न करते हैं। परंतु वर्तमान समय में डिजिटल माध्यमों के प्रयोग से छात्रों में एकाग्रता और सक्रियता की कमी ज्यादा आती है। ऐसे में आवश्यक है कि शिक्षक स्वयं को निरंतर उन्नत करें और छात्र भी निष्क्रिय श्रोता न बनकर सक्रिय होकर रचनात्मक चिंतन करने वाले विद्यार्थी बने, तभी शिक्षण प्रक्रिया मूल रूप से सफल हो सकेगी।

शोध अध्ययन के उद्देश्य– किसी भी शोध पत्र का उद्देश्य शोध की प्रासंगिकता, उपयोगिता व गहराई को इंगित करता हैं। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी संवादात्मक और जीवन उपयोगी बनाने हेतु शिक्षक छात्र के संबंध और उनके पारस्परिक योगदान को विस्तार से समझना और शिक्षण प्रक्रिया में उनकी भूमिका का अध्ययन करना है।

शोध विधि– प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध की वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है, तथा आंकड़ों के संकलन हेतु द्वितीयक स्रोतों जैसे –पूर्व में हुए शोध कार्य, पत्र पत्रिकाओं और संबंधित पुस्तकों का अध्ययन किया गया है।

शिक्षक की भूमिका

ज्ञान का स्रोत– शिक्षक ज्ञान प्रदान करने वाला मुख्य साधन होते है जो छात्रों को नई जानकारी से अवगत कराते हैं। परंतु इसके लिए शिक्षक को भी स्वयं अध्येता बनकर रहना चाहिए। रविंद्र नाथ टैगोर ने कहा है कि "एक जलता हुआ दीपक ही अन्य दीपक को प्रज्वलित कर सकता है" अर्थात शिक्षक को स्वयं भी सीखते रहना चाहिए। स्वामी विवेकानंद के अनुसार भी "शिक्षक/गुरु ऐसे व्यक्तियों को होना चाहिए जिसने जाना हो, वास्तव में दिव्य शक्ति का साक्षात्कार किया हो, केवल बातें करने वाला व्यक्ति गुरु नहीं हो सकता"।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 12, December 2025

मार्गदर्शक एवं प्रेरक– एक शिक्षक को हमेशा अच्छे छात्र ही नहीं मिलते बल्कि कई शिक्षा के प्रति उदासीनऔर लक्ष्य हीन होते हैं। एक योग्य शिक्षक ऐसे छात्रों के प्रति सहानुभूति रखता है और उनका मार्गदर्शन कर आशा का संचार करता है। शिक्षक का कार्य केवल विषय पढ़ना ही नहीं होता अपितु छात्रों के लिए सहायक, मार्गदर्शक के रूप में उनके व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाते हैं। छात्रों की शैक्षिक समस्याओं के साथ–साथ जीवन संबंधी समस्याओं पर शिक्षक एक कुशल मार्गदर्शक के रूप में मार्गदर्शन करते हैं और उसे उनकी क्षमताओं से अवगत कराते हैं।

नैतिकता और चरित्र निर्माण पर बल– शिक्षक छात्रों को नैतिक मूल्य की शिक्षा देते हैं। साथ ही अनुशासन एवं चरित्र निर्माण पर भी बल देते हैं, क्योंकि बिना चरित्र के शिक्षा का कोई महत्व नहीं है। इसी प्रकार नैतिक मूल्यों की शिक्षा से छात्र मनुष्य जीवन की उपयोगिता और उत्तरदायित्व से अवगत होता है, जो छात्र को एक योग्य नागरिक बनने में सहायता प्रदान करता है और जीवन को कोई का कोई उद्देश्य अनुशासित कार्य प्रणाली के द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। अतः छात्रों को अनुशासन का महत्व भी शिक्षकों के द्वारा ही सिखाया जाता है।

उत्साहवर्धन– माता–पिता के पश्चात एक शिक्षक ही होता है जो छात्रों में सुधार की आशा बनाए रखता है। ऐसे शिक्षक अपने छात्र की क्षमताओं को पहचान कर उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते रहते हैं। वह अपने छात्रों को कभी हतोत्साहित नहीं होने देते और उन्हें पुनः प्रयास करते रहने के लिए प्रेरित करते हैं।

छात्र की भूमिका

सक्रिय शिक्षार्थी– कोई भी छात्र निष्क्रिय रूप से कुछ भी नहीं सीख सकता। अतः छात्रों को कक्षा में रुचि लेनी चाहिए एवं कक्षा में सक्रिय भागीदारी निभानी चाहिए।

जिज्ञासु प्रवृत्ति– शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिए छात्रों को आवश्यक प्रश्न करने चाहिए और अपने संदेह को स्पष्ट करना चाहिए, क्योंकि जब छात्र प्रश्न करता है तो इससे पता चलता है कि छात्र सक्रिय होकर अध्ययन कर रहा है साथ ही सुने हुए तथ्यों पर विचार विमर्श भी कर रहा है, जो की एक छात्र के लिए आवश्यक गुण है।

अनुशासन एवं सहयोग– छात्रों के लिए उसका शिक्षक ही आदर्श होता है।अतः छात्रों को शिक्षक का अनुसरण करना चाहिए। शिक्षक जो भी निर्देश देता है, उसका पालन करना चाहिए और शिक्षण प्रक्रिया में सहयोग प्रदान करना चाहिए।

स्व–अध्ययन एवं अनुशासन– कक्षा में प्राप्त होने वाली शिक्षा सीमित होती है इसलिए छात्रों को स्व–अध्ययन के आदत विकसित करनी चाहिए। जो उसे भविष्य में आत्मनिर्भर बनने के लिए तैयार करेगी। छात्र के लिए पुस्तकीय ज्ञान पर्याप्त नहीं होता, उसे निरंतर अनुसंधान कर्ता के रूप में नए ज्ञान की प्राप्ति के लिए तत्पर रहना चाहिए।

पारस्परिक सहभागिता– शिक्षण प्रक्रिया शिक्षक और छात्र की पारस्परिक निर्भरता पर आधारित होती है। दोनों में से किसी एक की निष्क्रिय भागीदारी से शिक्षण प्रक्रिया सफल नहीं हो सकती। शिक्षक छात्रों को ज्ञान, मार्गदर्शन व प्रेरणा देते हैं, तो छात्र उसे ग्रहण कर सीखने की प्रक्रिया को गतिशील बनाते हैं। शिक्षण प्रक्रिया सुचारू रूप से तभी चल सकती है, जब दोनों ही अपनी–अपनी भूमिकाओं को सही ढंग से निभाएं।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 12, December 2025

एक शिक्षक अपने छात्र को शिक्षा देता है या किसी विद्या में निपुण करता है तो बाद में वही छात्र शिक्षक के रूप में दूसरों को शिक्षा प्रदान करता है। यह क्रम निरंतर चलता रहता है। अतः शिक्षण प्रक्रिया बिना शिक्षक– छात्र के मध्य सक्रिय अंतर–क्रिया के संपन्न नहीं हो सकती। वर्तमान में शिक्षा के डिजिटलीकरण से संवाद और सहभागिता के अवसरों में वृद्धि हुई है। फिर भी शिक्षक और छात्र दोनों को पारस्परिक सहभागिता की संभावना बनाए रखनी चाहिए।

पारस्परिक संवाद– शिक्षा संवाद से ही जीवंत होती हैं। संवाद छात्रों द्वारा अपने सहपाठियों और शिक्षकों के साथ चर्चा अथवा बातचीत में भाग लेने, सीखने की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग है। शिक्षक और छात्र के मध्य सक्रिय संवाद के दौरान छात्र अपने विचारों को साझा करते हैं तो उनके विषयज्ञान, आलोचनात्मक चिंतन और संवाद कौशल गहराई से विकसित होते हैं। संवाद का अर्थ बातचीत से कहीं ज्यादा है, इसमें शिक्षक और छात्र एक–दूसरे के विचारों को सुनते समझते और बात करते हैं। रॉबिन अलेक्जेंडर के अनुसार, "संवादात्मक शिक्षण जितना शिक्षक के बारे में है, उतना ही शिक्षार्थी के बारे में भी हैं।" शिक्षण प्रक्रिया की सफलता के लिए शिक्षक और छात्र को पारस्परिक रूप से संवाद प्रक्रिया संपन्न करना आवश्यक है। पारस्परिक कक्षा संवाद प्रभावी शिक्षण और सीखने की आधारशिला के रूप में कार्य करता है।

चुनौतियां और समाधान

शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक और छात्र के मध्य पारस्परिक संवाद और सहभागिता को सशक्त बनाने के मार्ग में कई प्रकार की व्यवहारिक, भावनात्मक और संरचनात्मक चुनौती आती है। प्रभावी शिक्षण प्रक्रिया की सफलता के लिए इन चुनौतियों का समाधान किया जाना आवश्यक है।

संवादहीन कक्षा वातावरण – आज भी ऐसे अनेक शिक्षण संस्थान है, जहां पर शिक्षण की परंपरागत व्याख्यान प्रणाली प्रचलित है। जिसमें शिक्षक वक्ता के रूप में और छात्र श्रोता के रूप में होते हैं। परंतु यह प्रणाली शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक छात्र के मध्य संवाद और पारस्परिक सहभागिता के अवसरों को सीमित करती है।

समाधान -

शिक्षकों को अन्य शिक्षण विधियां जैसे प्रश्नोत्तरी, समूह चर्चा, प्रोजेक्ट विधि आदि के कुशल प्रयोग के लिए प्रशिक्षित किया जाए।

- फिलिप्ड क्लासरूम जैसी विधियों को अपनाया जाए।
- छात्रों को खुलकर बातचीत के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

विभिन्न पृष्ठभूमि के छात्र– भारत देश विविधताओं का देश है। जहां के विद्यालय की प्रत्येक कक्षा में विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, भाषाई और क्षेत्रगत विभिन्नताएं देखने को मिलती हैं। परंतु इस आधार पर शिक्षक–छात्र के मध्य संबंध स्थापित करने में बधाएं उत्पन्न होती हैं, विशेषकर कुछ छात्र स्वयं को उपेक्षित महसूस करते हैं।

समाधान–

- शिक्षक को समावेशी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।
- शिक्षक को विविधता का सम्मान करना चाहिए।

शिक्षा के बहुभाषी संसाधन– श्रव्य–दृश्य सामग्री और सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन करना चाहिए।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 12, December 2025

तकनीकी संसाधनों की कमी– आज के आधुनिक डिजिटल युग में संवाद और सहभागिता को बढ़ाने के लिए तकनीकी संसाधनों का प्रयोग आवश्यक हो गया है। परंतु कई विद्यालयों में इनकी उपलब्धता का अभाव है।

समाधान –

- तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता के लिए सरकारी व निजी स्तर पर सहयोग प्रदान किया जाए।
- उपलब्ध संसाधनों के प्रयोग से शिक्षकों को शिक्षित किया जाए।
- डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा दिया जाए, शिक्षक और छात्र को जागरूक किया जाए।

उत्तरदायित्व की भावना में कमी – कभी–कभी शिक्षण प्रक्रिया बहुत ही अनौपचारिक होती है। शिक्षक और छात्र दोनों के संबंध केवल विषय ज्ञान तक सीमित होते हैं, जिससे संवाद और सहभागिता का उद्देश्य पूर्ण नहीं हो पाता और शिक्षण प्रक्रिया निष्क्रिय वातावरण में संपन्न होती हैं।

समाधान –

- शिक्षा में नैतिक मूल्य, आदर्श और उत्तरदायित्व की भावना पुनःस्थापित की जाए।
- सामाजिक गतिविधियों का आयोजन किया जाए।
- शिक्षक और छात्र के मध्य संबंध को मानवता और संस्कृति पर आधारित होना चाहिए।

निष्कर्ष– शिक्षा केवल कक्षा तक सीमित नहीं है अपितु यह एक जीवन दृष्टि है, जो मनुष्य के चारित्रिक विकास, मानसिक विकास और सामाजिक उत्तरदायित्व को आकार प्रदान करती है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपने मूल प्रवृत्तियों का दास न बनकर पशु जीवन को छोड़कर मनुष्य जीवन की ओर अग्रसर होता है। परंतु शिक्षा की यह प्रक्रिया शिक्षक और छात्र रूपी दो महत्वपूर्ण स्तंभों की उपस्थिति में ही संपन्न हो सकती है।इस प्रक्रिया में शिक्षक सृजनकर्ता के रूप में होता है तो छात्र एक रचनात्मक ग्रहणकर्ता के रूप में होता है। भारतीय समाज में शिक्षकों को बहुत उच्च स्थान दिया जाता है उन्हें छात्रों का निर्माता कहा जाता है। एक कुशल छात्र अपने शिक्षक की ही प्रतिमूर्ति होता है। शिक्षक और छात्र के बीच जब संवाद, परस्पर योगदान संपन्न होता है, तो उनका संबंध और घनिष्ठ होता है। जिससे छात्रों में उचित अभिवृति का विकास होता है तब शिक्षण की प्रक्रिया सफल मानी जाती है।

विस्तृत अध्ययन और विश्लेषण के पश्चात् स्पष्ट होता है। शिक्षण प्रक्रिया अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है। यह केवल शिक्षक द्वारा ज्ञान देने और छात्र द्वारा उसे ग्रहण करने की परंपरागत व्यवस्था तक सीमित नहीं है। शिक्षक और छात्र के मध्य एक पारस्परिक सहभागिता, संवाद, विश्वास और सम्मान की आवश्यकता होती है। अब शिक्षक केवल ज्ञानदाता नहीं अपितु मार्गदर्शक, प्रेरक और सृजनकर्ता, नेतृत्वकर्ता की भूमिका निभाते हैं और छात्र केवल निष्क्रिय ग्रहणकर्ता नहीं बल्कि सक्रिय उत्तरदाई शिक्षार्थी बनते हैं, तभी शिक्षा एक सजीव, सार्थक और परिवर्तनशील प्रक्रिया में बदलती है। निष्कर्षतः शिक्षा एक सतत संवाद है, जो शिक्षक और छात्र दोनों के सक्रिय योगदान से ही पूर्ण होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. सिंघल अनुपमा, एस.पी कुलश्रेष्ठ, शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार, (2008) अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृष्ठ संख्या– 561, 564

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 12, December 2025

2. रिचर्ड, जेसिका (2024) संवाद को अपने शिक्षक के केंद्र में रखना।
3. स्पाल्डिग, अलेक्जेंड्रा (2023) संवादात्मक शिक्षक एवं कक्षा वार्तालाप संवाद एवं वाक– कुशलता में सुधार कैसे करें?
4. रॉजर्स गिना, डिजिटल लर्निंग टीम,ट्रा. क्लासरूम टीम (2022) कक्षा में छात्र संवाद का महत्व।
5. दाई,पिन्यु (2024) छात्रों के सीखने पर शिक्षक छात्र संबंध का प्रभाव,रिसर्च गेट।
6. निकिआओका, विकी (2019) शिक्षकों के साथ सकारात्मक और देखभाल पूर्ण संबंध छात्रों की सफलता के लिए महत्वपूर्ण है।
7. रियली फ्रिमॉरिस, सेरेना रूसो, शेल्बीकोरिस्टिन, गैबीरिवोल्ट, पेट्रोसिया बेनिनाटो (2022) छात्र शिक्षक संबंधों का महत्व।
8. गुरु या शिक्षक पर स्वामी विवेकानंद के उदाहरण (2020) देव वाणी।
9. तड़ागी, सावित्री, प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में गुरु शिष्य संबंध, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इन्नोवेटिव सोशल साइंस एंड ह्यूमैनिटी रिसर्च
10. क्रिएटिव यूनिटी, पेज नं.187
11. बहेरा, चिरंजीवी, (2024) आर.एन. टैगोर और एजुकेशन
12. सोनी, अनिल (2021) वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली व वर्तमान शिक्षक शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन, NJRIP
13. शर्मा, ओ.पी. (2013–14) शिक्षा के दार्शनिक आधार